Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

ग्रामीण समाज के पुरुषों और महिलाओं पर जनसंचार के माध्यमों का प्रभाव

कविता कनौजिया
असि0 प्रो0 समाजशास्त्र विभाग, उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4 Issue 3
Page Number : 88-93
Publication Issue :
May-June-2021
Article History
Accepted : 20 June 2021
Published : 30 June 2021

शोधसारांश–जनसंचार माध्यमों के परिप्रेक्ष्य में समाज में अब सम्प्रेषण के क्षेत्र में अध्ययन की प्रवृति में तेजी आयी है। शोधकर्ताओं ने गहन अध्ययनों और अनुभवों के आधार पर जनसंचार माध्यमों का समाज के विभिन्न पक्ष सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक धार्मिक पक्षों पर पड़ने वाले प्रभावों को प्रस्तुत करने का कार्य किया है। जनसंचार के प्रयोग द्वारा ग्रामीण समाज वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं से जुड़ रहा है। जनसंचार माध्यमों के द्वारा सरकारी योजनाओं की अधिक जानकारी प्राप्त होने से ग्रामीण लोग उन योजनाओं का आर्थिक लाभ उठा पा रहे हैं।

मुख्य शब्द– ग्रामीण, समाज, महिला, जनसंचार, माध्यम।

प्रस्तावना– जनसंचार समस्त मानवीय क्रियाओं का आधार है। संचार की प्रक्रिया सामाजिक व्यवस्था के सम्पूर्ण ढाचें मे आन्तरिक रूप से इस प्रकार आबद्व है कि इसके अभाव में सामाजिक जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जनसंचार से तात्पर्य उन सभी साधनों के अध्ययन और विश्लेषण से है जो एक साथ बहुत बडी जनसंख्या के साथ संचार स्थापित करने मे सहायक होते है। प्रायः इसका अर्थ सम्मिलित रूप से समाचार पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्र से लिया जाता है जो समाचार एवं विज्ञापन दोनो के प्रसारण के लिए प्रयुक्त होते है। नाट्य, संगीत, भजन, कीर्तन, धर्मोपदेश, आदि के द्वारा भी जनसंपर्क किया जाता है। ल्यूशन पाई ने संचार को मानव समाज का तानाबाना कहा है जो मानवीय अन्तः क्रियाओं का आधार होने के साथ–साथ सामाजिक विकास की गति एवं दिशा को भी निर्धारित करता है।

जनसंचार शब्द का प्रयोग ऐसे संचार हेतु किया जाता है जो कि श्रोताओं तक
सूचनाओं एवं संदेश एक साथ विस्तृत क्षेत्र मे पहुॅचाने की क्षमता रखता है।
जनसंचार अपेक्षाकृत बडे, विविध, जातीय और अपरिचित श्रोता समूह की ओर लक्षित होता है। इसी कारण आधुनिक औद्योगिक समाजो मे व्यापक जनमत को प्रभावित या परिवर्तित करने के उद्देश्य से प्रचारको द्वारा सामूहिक जनसंचार साधनो का प्रयोग किया जाता है।

सामान्य रूप में सूचना देने वाला , सूचना देने से पूर्व विषय को अपने तरीके से परिवर्तित करता है। जिसे संकेतन Encoding कहा जाता है। इसी प्रकार सूचना ग्रहण करने वाला त्मबपअमत सूचना ग्रहण करने से पूर्व अपने तरीके से सूचना को समझता है फिर ग्रहण करता है उसे विसंकेतन Decoding कहते है। इस प्रकार सूचना या विचार उचित संचार माध्यम के द्वारा सूचना वाहक से श्रोता तक पहुॅचता है इसे प्रदर्शित किया जा सकता है।

विचार Idea	सूचना देने वाला Sender	संकेतन Encoding	संचार माध्यम Channal	विसंकेतन Decoding	सूचना ग्रहण करने वाला Reciver	विचार Idea

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

जनसंचार माध्यम

परम्परागत माध्यमः– मानव प्राचीन समय से अपनी भावनाएँ, संदेश को व्यक्त करने के लिए परम्परा से चले आये जनसंचार माध्यमों का प्रयोग करता रहा है। परम्परागत माध्यमों मे काल के अनुरूप परिवर्तन दिखाई देते आये है। किन्तु ये सभी परम्परागत जनसंचार माध्यम कुछ सीमा तक वर्तमान समय मे भी प्रभावी दिखाई देते है।

1. **लोककलाएँः–** चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, हस्तकला।
2. **लोकनृत्यः–** कठपुतली नृत्य, समूह नृत्य, विवाह आदि अवसर पर किये गये नृत्य।
3. **लोकगीतः–** विभिन्न क्षेत्रो के परम्परागत गीत, जन्म, मुण्डन , विवाह, जन्मदिवस, अैर त्यौहारो के अवसर पर गाये जाने वाले गीत।
4. **लोकनाट्यः–** नौटंकी, तमाशा, भवई, रास, जात्रा, अंकिया, नाटक आदि।
5. **लिखित स्वरूपः–** ताम्रपत्र, शिलालेख, कला, पत्रक।
6. **लोक गाथाएंः–** प्रशस्ति परक काव्य, तथा शौर्य गाथाएं।
7. **सामाजिक तथा धार्मिक पर्व** :– उत्सव, त्यौहार, मेले, प्रदर्शनियॉ, कीर्तन आदि।
8. **धार्मिक आयोजनः–** मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, और आश्रमों मे होने वाले धार्मिक उत्सवों के अवसर पर लोग भारी संख्या मे एकत्रित होते है तथा संचाद करते है।

आधुनिक माध्यमः– मनुष्य सदैव प्रगति के मार्ग पर चलना उचित मानता रहा है इसके फलस्वरूप जनसंचार के क्षेत्र में मनुष्य ने प्रगति की है और नित नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। विश्व के किसी कोने मे घटित घटना की जानकारी हमे जनसंचार माध्यमो द्वारा प्राप्त होती है।

1. **दूरदर्शनः–** दूरदर्शन दृश्य श्रव्य माध्यम है। रेडियो पर केवल समाचारों को सुना ही जा सकता है किन्तु दूरदर्शन के आने से विश्व मे घटित किसी भी घटना का सीधा प्रसारण तरंगो के द्वारा देखा व सुना जा सकता है।
2. **फिल्में** :– फिल्में दृश्य श्रव्य साधन का प्रभावी माध्यम है। फिल्मो मे पात्र जो अभिनय करते है। उन्हे देखने सुनने से व्यक्ति उनसे जुड जाता है और इन्ही की छवि के अनुरूप कार्य करने की इच्छा रखता है। फिल्में समाज को आइना दिखाती है। फिल्म की कहानी मे सामाजिक समस्याओं देशभक्ति, मानवता, मित्रता, और सांस्कृतिक पक्ष होते है। सामाजिक मुद्दों पर फिल्में बनाई जाती है। जिससे जनसंचार का कार्य होता है।
3. **समाचार पत्र पत्रिकाएं** :– समाचार पत्र, पत्रिकाओं, का इतिहास अन्य संचार माध्यमों से कही अधिक पुराना है। आज भी विश्व की अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं इन पत्र पत्रिकाओं के रूप मे इतिहास का जीवन्त दस्तावेज बन चुकी है। इसकी पहुॅच समाज के प्रत्येक वर्ग तक सरल और कम खर्चीली है।
4. **कम्प्यूटर** :– वर्तमान समय में कम्प्यूटर ने संचार के क्षेत्र मे अपना एक विशेष स्थान बना लिया है। शायद ही समाज का कोई ऐसा क्षेत्र होगा जहॉ कम्प्यूटर की अनिवार्यता न हो। वैज्ञानिक क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, व्यापारिक क्षेत्र, अन्तरिक्ष विज्ञान में, पर्यावरण क्षेत्र, संचार क्षेत्र, शिक्षा क्षेत्र सभी क्षेत्रों मे कम्प्यूटर का महत्वपूर्ण योगदान है।
5. **इण्टरनेटः–** कम्प्यूअर तंत्र का सबसे महत्वपूर्ण आरै प्रभावी साधन इण्टरनेट है। तब इलेक्ट्रानिक माध्यमों में इण्टरनेट ने सूचना के क्षेत्र में अद्भुत क्रांति उत्पन्न कर दी है। इण्टरनेट का आरम्भ और विकास संयुक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय विकास अकादमी द्वारा सन् 1990 में किया गया। कई कम्प्यूटरों को जोड़ने का काम इण्टरनेट द्वारा होता है। इण्टरनेट की सहायता से इलेक्ट्रॉनिक मेल द्वारा हम विश्व के किसी भी कोने मे अपने संदेश के क्षण भर में भेज सकते है। इण्टरनेट ने सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र मे बांध दिया है।

6. विज्ञापनः– वर्तमान समय मे बाजार में आने वाली प्रत्येक वस्तु और सेवा को सम्मोहक जानकारी देने का एक ठोस माध्यम विज्ञापन है। विज्ञापन जहां समाचार माध्यमों के लिए राजस्व जुटाने का काम करते है। वही इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में कुछ विज्ञापनों द्वारा दर्शको का मनोरंजन भी होता है। विशेषतः बच्चे इन विज्ञापनो से अधिक प्रभावित होते है।

7. सोशल मीडियाः– सोशल मीडिया एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा आप देश दुनिया के अनेक व्यक्तियों से ऑनलाइन तकनीक मे माध्यम जुड़ सकते है। सोशल मीडिया न्यूज, व्यूज, सूचना, मनोरंजन, मार्केटिंग, एवं प्रमोशन का सुलभ उपकरण है। फोटो शेयरिंग, ब्लॉगिंग, सोशल गेमिंग, सोशल नेटवर्क, वीडियो शेयरिंग, बिजनेस नेटवर्क, वर्चुवल वर्ल्ड, रिव्यू आदि सोशल मीडिया के अन्तर्गत ही आते है। फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, लिंक्डइन, ट्विटर, वाट्स–एप, पिनटेरेस्ट, स्नैपचैट, सोशल मीडिया के उदाहरण है।

भारत मे डिजिटल क्रांति महत्वपूर्ण है क्योकि इसने समाज के लगभग सम्पूर्ण क्षेत्रो मे बडे पैमाने पर परिवर्तन किया है। वर्तमान सरकार की डिजिटल इंडिया पहल के साथ शासन प्रणाली से लेकर उत्तम स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा सेवाओं मे डिजिटलीकरण कैशलैस अर्थव्यवस्था और डिजिटल लेन देन नौकरशाही मे पारदर्शिता कल्याणकारी योजनाओं का निष्पक्ष और तेजी से क्रियान्वयन दिखाई दिये है। नगरीय समाज के लोग तो डिजिटल क्रांति के आगमन से जनसंचार के साधन इण्टरनेट मोबाइल टेबलेट आदि का पूरा लाभ उठा रहे है हमारे अध्ययन का उद्देश्य यह है कि हम ग्रामीण पृष्ठभूमि के लोगो के बारे मे यह जानने का प्रयास करे कि जनसंचार माध्यमों का उन पर क्या प्रभाव पड रहा है। क्या ग्रामीण समाज के लोग संचार साधनों का लाभ उठा पा रहे है क्या ग्रामीण लोग वैश्वीकरण की प्रक्रिया से जुड़ पा रहे है यह सब जानने की आवश्यकता है क्योकि भारत एक ग्रामीण समाज है यहॉ की अधिकांश जनसंख्या गांवो मे निवास करती है इसलिए ग्रामीण समाज पर जनसंचार माध्यमों की प्रभाविकता को जानना अति आवश्यक है।

वर्तमान युग में आज जब वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया मे सम्पूर्ण नगरीय समाज के लोग जनसंचार साधनों के प्रयोग द्वारा परस्पर एक दूसरे से जुड़ रहे है, आर्थिक आदान–प्रदान कर रह है। बैंकिंग, डिजिटल लेन–देन, व्यापार, आदि के क्षेत्र मे प्रगति कर रहे है। नवाचार और रोजगार के क्षेत्र मे वृद्वि हो रही है तथा अधिकतम उत्पादन का लाभ प्राप्त कर रहे है। जिस प्रकार नगरीय समाज के लोग वैश्वीकरण की प्रक्रिया का लाभ उठा रहे है क्या उसी प्रकार ग्रामीण समाज के लोग भी जनसंचार माध्यमों के प्रयोग द्वारा वैश्वीकरण की प्रक्रिया का लाभ उठा पा रहे है। शैक्षिक क्षेत्र मे प्रगति कर पा रहे है या नहीं क्या ग्रामीण पुरूष और महिलाएं समान रूप से उसका लाभ उठा पा रहे हैं।

वर्तमान प्रगतिशील युग मे शोध का महत्व सतत् रूप से बढता जा रहा है किसी भी शोध विषय के अध्ययन का महत्व उससे जुड़ें हुये पक्षों के संदर्भ मे होता है ताकि उन्हे गहन रूप मे समझा जा सके। प्रस्तुत शोध बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि नसंचार साधनों का सामाजिक जीवन प्रत्येक क्षेत्र मे महत्वपूर्ण योगदान है। जनसंचार साधनों के प्रयोग द्वारा ग्रामीण समाज की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित किया जायेगा, ग्रामीण समाज के लोगो को वैश्वीकरण की अवधारणा की विस्तृत जानकारी प्राप्त होगी जिसके माध्यम से ग्रामीण समाज के लोग वैश्वीकरण की प्रक्रिया से स्वयं को जोड़ पायेगे।

वर्तमान समय मे जनसंचार साधनो की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। जनसंचार माध्यम सामाजिक जीवन मे परिवर्तन लाते है। और जनसंचार साधनों ने सभी वर्गो को प्रभावित किया है। जनसंचार एक प्रवाहमयी प्रक्रिया है जिसमे सूचनाएं नित्यप्रति प्रवाहित होती रहती है। वर्तमान समय में जनसंचार साधनों ने ग्रामीण पुरूषों और महिलाओं की स्थिति मे परिवर्तन लाने हेतु संचार साधन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। आज ग्रामीण समाज के पुरूषों और महिलाओं मे भी सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक क्षेत्रो मे जागरूकता के कारण परिवर्तन दिखाई दे रहे है।

1. **पाठक शिवानी के अनुसार (2005)** वर्तमान में जनसंचार माध्यम समाज के परिवर्तन का उपकरण बन गया है यह प्रत्येक सामाजिक नियोजन का हिस्सा है जनसंचार मात्र आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एंव सामाजिक तत्वों को ही प्रभावित नही करता वरन यह सामाजिक एंव व्यक्तिगत स्तर पर सामाजिक जीवन को विकसित एंव क्रियाशील करता है।
2. **मिश्र अजय कुमार के अनुसार (2013)** शोधकार्य में ग्रामीण महिलाओं पर पड़ने वाले प्रभावों का आकलन किया। सामाजिक आर्थिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त किया गया है। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन का गणित, विज्ञान एंव सामाजिक अध्ययनों के तहत ग्रामीण महिलाओं पर पड़ने वाले प्रभावों को दर्शाया गया है। कृषि सम्बंधी क्रांतियो को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में

सूचना स्त्रोतो की भूमिका एंव ग्रामीण महिलाओं के आचार, व्यवहार, हार–श्रृंगार, हाव भाव, बोलचाल आदि सभी में व्यापक परिवर्तन आया है।

3. **के0 स्वाती (2018)** महिला सशक्तिरण में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका प्रस्तुत लेख में संचार क्रांति आने से गॉवो में रोजगार के संसाधन बढ़े है तथा महिलाओं को भी रोजगार प्राप्त हुआ है । महिलाएं मोबाइल रखना चाहती है। गॉव में संचार सुविधांए आने के बाद और कई तरह की सुविधाओ को चार चॉद लग गये है । अब गॉवों में जगह–जगह पर साइबर कैफे खुल रहे है। ग्रामीण महिलाएं भी अब कम्प्यूटर एंव इंटरनेट की जानकारी प्राप्त कर रही है जिससे एक ओर उनका ज्ञान बढ़ रहा है और दूसरी ओर रोजगार मिल रहा है।

4. **पाण्डेय मनीशा (2000)** ने अपने शोध में ग्रामीण रूपान्तरण में जनसंचार

माध्यमो की प्रभाविकता ग्रामीण समुदाय में प्रचलित संचार के परम्परागत साधनों के स्थायित्व और निरन्तरता तथा सूचना सम्प्रेषण के नवीन साधनों के प्रभाव का अध्ययन किया जिसमें परम्परागत साधनों, लोकगीत, नौंटकी, कठपुतली खेल, मदारी, जादूगर आदि को ग्रामीण मनोरंजन का सस्ता व सुलभ साधन मानते है। नवीन माध्यम टी.वी, रेडियो, इंटरनेट नवीन जानकारी प्रदान करने का प्रभावी माध्यम है । सूचना सम्प्रेषण में क्षेत्र के सरकारी अधिकारियों की भूमिका का अध्ययन करते हुए यह विदित होता है कि ये सभी सूचना सम्प्रेषण के क्षेत्र में सामान्य भूमिका निभाते है। सरकारी कार्यक्रमों, योजनाओं का लाभ ग्रामीण निर्बल बल को यथेष्ट मात्रा में नहीं पंहुच पाता है अज्ञानता और गुटबन्दी को भी ग्रामीण विकास कार्यक्रमों की असफलता का प्रमुख कारण माना है। ग्रामीण विकास कार्यक्रमों का लाभ बहुधा उच्च जाति के प्रभावशाली व्यक्तियों द्वारा हड़प लिया जाता है।

5. **राजगढ़िया विष्णु 2008** ने अपनी पुस्तक 'जनसंचार सिंद्वान्त और अनुप्रयोग' में

सूचना क्रांति के विभिन्न रूपो तथा तकनीक में नित्य विकास ने संचार के क्षेत्र में नये नये आयाम जोड़े है – प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संचार के सम्भावनाओं को बताया है। मार्क्सवादी विचारको ने भी जनसंचार से जुड़े विविध पहलुओं पर गंभीर चिंतन किया है। जनसंचार के तत्काल प्रभाव तथा दीर्घकालीन प्रभाव की कल्टिवशन थ्योरी की भी बात की गई है।

6. **शर्मा संध्या 2016** ने आधुनिक संचार माध्यमों का ग्रामीण जीवन पर कारात्मक व नकारात्मक दोनो प्रकार का प्रभाव पडा है । रेडियो, टेलीफोन, दूरदर्षन, टेलीग्राफ, फैक्स, ई मेल, कम्प्यूटर, मोबाइल आदि संचार माध्यम ग्रामीण समाज पर अनुकूल प्रभाव डालते है वर्तमान समय मे शिक्षा व्यवस्था स्वास्थ सम्बधी कृषि आदि संबधी समस्याओं का हल इंटरनेट पर सुगमता से प्राप्त हो जाता है। ग्रामीण जनता इसका भरपूर उपयोग कर रही है। ग्रामीण समाज में शिक्षा के प्राति जागरूकता आई है जनसंचार के युग में नई तकनीक ने सूचना पाने के कई संसाधनों को जन्म दिया है जिन्होने ग्रामीण जीवन में एक बड़ा परिवर्तन लाया है ग्रामीण लोगो का दृष्टिकोण परिवर्तित हुआ है। शिक्षा को ग्रामीण समाज में महत्व दिया जाने लगा है। इंटरनेट के कारण कृषि कार्यो तथा विपणन में आसानी रहती है । इंटरनेट के कारण बैकों की पहुंच गावों तक हो गयी है । गाँवो में भी युवाओं की संख्या का प्रतिशत अधिक हुआ है जो एम0 बैंकिग, ई–टिकिटिंग, ई शॉपिंग, ई–रिजर्वेशन आदि का उपयोग कर समय बचाकर गाँवो में ही इस सुविधा का उपयोग कर रहे है किन्तु इंटरनेट कनेक्टिविटी आज भी कही न कहीं समस्या बनी हुई है।

7. **मिश्र कुमार विनोद 2020** ने बताया कि जनसंचार समाज में तीव्र परिवर्तन के लिए उत्तरदायी है सामाजिक मूल्यों को भी बनाये रखने का दायित्व मीडिया पर है आपसी बातचीत, विचार विमर्श, वाद– प्रतिवाद के द्वारा नयी नयी मान्यतांए स्थापित की जा सकती है। संदशो के आदान प्रदान से व्यापार कार्यशैली, मनोरंजन, खानपान, वेशभूषा, रहन सहन, जीवनशैली को तो प्रभावित किया है परन्तु जनसंचार माध्यमों को सामाजिक सरोकारों में भी अपनी सुदृढ़ सकारात्मक भूमिका का निर्वाह करना बाकी है। लोकतंत्र मतदान अधिकार, स्त्रीशिक्षा प्रसार, महिला जागरूकता, बंधुआ मजदूरी की समाप्ति अंधविश्वासो कुप्रथाओं का उन्मूलन, अधिकारों का संरक्षण जैसे नवीन विचारों को स्थापित करने का काम जनंसचार ने किया है। जनंसचार साधनों ने अपनी महत्ता को सबसे परिचित करवा दिया है इसने एक नयी संस्कृति को विकसित करने का प्रयास किया है आम जनता को जागरूक किया है तथा सामाजिक चेतना का प्रसार किया है। संचार क्रान्ति आज सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन गयी है।

8. कुरूक्षेत्र 2016 वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे मोबाइल के माध्यम से गॉव के प्रत्येक क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। इंटरनेट और तकनीक का विस्तार सभी दिशाओं में तेजी से फैला है आधुनिक तकनीक और डाटा प्रंबधन ने सरकार और नागरिको के बीच अंतर को पाटा है। इसका सीधा असर नागरिक सहभागिता और जागरूकता पर पड़ता है जिससे लोकतंत्र मजबूत होता है । मोबाइल हमारे सामाजिक, आर्थिक जीवन का अहम हिस्सा बन गया है इसने हमारे सोचने, काम करने, प्रतिक्रिया व्यक्त करने , बातचीत करने और जीवनशैली में बहुत परिवर्तन ला दिया है । वर्तमान समय में षासकीय व अशासकीय प्रत्येक कार्य सीधे मोबाइल के माध्यम से जोड़ा गया है। इस पत्रिका में डिजिटल इंडिया एक क्रांति जो बिना किसी सीमा को जाने पहचाने लोगो को सूचना का अधिकार प्रदान करती है।

9. राठौड़ हितेन्द्र सिंह 2010 ने अपनी पुस्तक 'जनसंचार साधन और ग्रामीण समुदाय' में बताया कि आज के समय में जनंसचार माध्यमो की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। समाज में विकास प्रगति और परिवर्तन लाने के लिए जनसंचार माध्यम एक प्रभावी कारक है जंनसंचार साधनों में प्रत्येक वर्ग को छुआ है। इस पुस्तक में ग्रामीण समाज को जनंसचार माध्यमो ने किस प्रकार प्रभावित किया है यह दर्शाया गया है इसमें गॉव की वास्तविक स्थिति और जंनसंचार का प्रभाव दिखाई देता है । ग्रामीण समाज की समस्याओ को हल करने में सहायक है। ग्रामीण लोगो की सोचने समझने, विचार करने की शैली में भी परिवर्तन आया है। जनसंचार माध्यमों ने ग्रामीणों में शिक्षा के प्रति रूझान को बढाया है।

10. कुमार डॉ सुबोध 2012 अपने अध्ययन में बताया कि जनंसचार माध्यम

किसी भी समाज में सूचना प्रसार का महत्वपूण साधन है यह सूचना, शिक्षा, मनोरंजन, सास्कृतिक विकास और सामाजिक एकता को सुदृढ़ करने में हत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संचार को भारतीय दर्श न का अभिन्न भाग के रूप में दर्शाया गया है। संचार जातिव्यवस्था को तोड़ने में कैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारतीय समाज और संचार के आधुनिक साधन इंटरनेट ,मोबाइल के उचित प्रयोग के लाभो के बारे में बताया है। जनसंचार माध्यमो के सकारात्मक व नकारात्मक दोनो की प्रकार से प्रभाव दिखाई देते है। लोकतंत्र में मीडिया सरकार और जनता के बीच सेतु का काम करता है । जागरूकता फैलाता है यंहा संचार की भारतीय अवधारणा को समझने का प्रयास किया गया है।

11. सिंह विजय कुमार 2007 ने शोध 'ग्रामीण विकास में संचार माध्यमो की

भूमिका' अध्ययन से यह विदित है कि ग्रामीण कार्यक्रमों के प्रति ग्रामीण जन की जागरूकता एंव ग्रहणता के क्षेत्र में जनसंचार की भूमिका सीमित मात्रा में प्रभावशाली रही है। ग्रामीण समाज में जातिगत भेदभाव, भूस्वामित्व का वर्चस्व गुटबन्दी कारक विकास कार्यक्रमो को क्रियान्वयन के क्षेत्र में जितने अधिक प्रभावशाली भूमिका का निर्वाह करते है उतना कार्यक्रमों के सामान्य जनसंचार के अभिकरण नहीं । ग्रामीण क्षेत्र में व्याप्त अशिक्षता, अज्ञानता के कारण जनसंचार माध्यमों का उपयोग अत्यन्त सीमित मात्रा मे कर पाते है जबकि इलेक्ट्रानिक मीडिया का प्रयोग मुख्यतः मनोरंजन के लिए किया जा रहा है । पारम्परिक जनसंचार माध्यमों का स्थान ग्रामीणों के अधिक निकट है क्योकि यह उनकी भावनाओ और संवेदनाओं से जुड़ा रहता है।

निष्कर्ष – जनसंचार माध्यमों के परिप्रेक्ष्य में समाज में अब सम्प्रेषण के क्षेत्र में अध्ययन की प्रवृति में तेजी आयी है। शोधकर्ताओं ने गहन अध्ययनों और अनुभवों के आधार पर जनसंचार माध्यमों का समाज के विभिन्न पक्ष सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक धार्मिक पक्षों पर पड़ने वाले प्रभावों को प्रस्तुत करने का कार्य किया है। जनसंचार के प्रयोग द्वारा ग्रामीण समाज वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं से जुड़ रहा है। जनसंचार माध्यमों के द्वारा सरकारी योजनाओं की अधिक जानकारी प्राप्त होने से ग्रामीण लोग उन योजनाओं का आर्थिक लाभ उठा पा रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाठक, शिवानी (2005), ग्रामीण महिलाओं पर जनसंचार माध्यमों का प्रभाव
2. मिश्र अजय कुमार (2013) , ग्रामीण महिलाओं पर जनसंचार माध्यमों का प्रभाव
3. के0 स्वाती (2018) , महिला सशक्तिकरण में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका, वाल्यूम 5
4. कुमार डॉ0 सुबोध (2012), जनसंचार और भारतीय समाज, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइन्टिफिक रिसर्च खंड 1
5. मिश्र विनोद कुमार (2020), जनसंचार माध्यम एंव सामाजिक उत्तरदायित्व, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च

6. शर्मा संध्या (2016), संचार माध्यमों से बदलता ग्रामीण जीवन, शब्द ब्रह्म पियर रिव्यूड रिफ्रीड रिसर्च जर्नल खंड 4
7. यादव राजेश कुमार (2017) ग्रामीण विकास में संचार माध्यमों की भूमिका
8. पांडेय मनीष (2000), ग्रामीण रूपान्तरण में जनसंचार माध्यमों की प्रभाविकता
9. राठौड़ हितेन्द्र कुमार (2010), जनंसचार साधन और ग्रामीण समुदाय, हिमांशु प्रकाशन
10. ओचेनी स्टीफन, नवाकोव सी बेसिल (2012), विज्ञान के समाजशास्त्र में अध्ययन
11. पाई ल्यूशन 1972, कम्यूनिकेशन एण्ड पालिटिकल डेवलपमेण्ट राधाकृष्णन प्रकाशन पृष्ठ 04
12. महाजन, धर्मवीर : राजनीतिक समाजशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1996, पृष्ठ 231
13. डॉ पाटनी मंजू, डॉ शर्मा ललिता : प्रसार षिक्षा एंव संचार, स्टार पब्लिकेशन पृष्ठ संख्या 146
14. आहूजा ,राम : भारतीय समाज, रावत पब्लिकेषन, पृष्ठ संख्या 286
15. अरोड़ा डॉ हरीश : जनसंचार, युवा साहित्य चेतना मंडल
16. यंग पी0 वी0 , साइंटिफिक सोशल सर्वेज एंड रिसर्च , पेज नं0 96
17. राजगढ़िया विष्णु (2008), जनसंचार, सिद्वांत और अनुप्रयोग
18. कुरूक्षेत्र 2016, ' मोबाइल क्रान्ति ने दी ग्रामीण विकास को नई दिषा
19. सिंह, विजय कुमार : 2007 ग्रामीण विकास में संचार माध्यमों की भूमिका
20. Goode W J and Hatt P.K, Methods in social research, page 209
21. Ackoff , R. L. Design of Social Research, University of Chicago Press 1953
22. https://hi.m.wikipedia.org
23. https://en.m.wikipedia.org
24. www.census2011.co.in